अध्याय I

प्रस्तावना

1.1 भूमिका

1.1.1 पर्यावरणीय शिक्षा

1.1.2 स्थानीय स्तर पर पर्यावरणीय जागरूकता

1.1.3 राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरणीय जागरूकता

1.1.4 अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरणीय जागरूकता

1.2 अध्ययन की आवश्यकता

1.3 समस्या का कथन

1.4 शोध कार्य के उददे्श्य

1.5 परिकल्पना

1.6 तकनकी शब्दों की परिभाषा

1.7 अध्ययन का सीमांकन

अध्याय I

प्रस्तावना

1.1 भूमिका :–

शुद्ध वायु, जल, भोजन, दुर्लभ, बड़ा प्रदूषण का अंधियार ।
प्राकृतिक संसाधन विनाशे, अस्त व्यस्त जन जीवन धारा ।।
पर्यावरण अनवरत स्वच्छ हो, ऐसी संरचना करनी है।
धरती के कण – कण में हमकों, सुरक्षिते हरियाली भरती है।

साधारणतयाः कोई भी व्यक्ति यह प्रश्न पूछ सकता है कि पर्यावरण क्या है? आइनस्टिन ने एक बार कहा था कि मुझे छोड़कर और सभी पर्यावरण है। अन्य शब्दों में हम कह सकते हैं कि "प्रत्येक व्यक्ति के बाहर बाहर उपस्थित सभी के अंतिम विश्लेषण को पर्यावरण कहते हैं। "यह विश्व जिसमें हम रहते हैं व जिसका हम भाग हैं, इसे कासमस था ब्रहमांड (cosmos) कहते हैं। इस कासमस में वायु, जल, मृदा, सूर्य, चन्द्रमा तथा अन्य ग्रह होते है। इसमें पादप, प्राणी, नदी, पहाड़ मरूस्थल तथा महासागर आते हैं। कुल मिलाकर ये सभी प्रकृति को बनाते हैं। यह प्रकृति जिससे हम सभी जुड़े हैं, हमारा पर्यावरण है।"

पर्यावरण को समझने का अन्य तरीका है इसे भौतिक, रसायनिक तथा जैविक पर्यावरण में वर्गीकृत करना। भौतिक पर्यावरण के अंतर्गत विकिरण (प्रकाश), तापमान (ऊष्मा), आद्रता तथा वर्षा आते हैं। रसायनिक पर्यावरण में जल, गैस, अम्ल, आरक, अकार्बनिक तत्व तथा कार्बनिक पदार्थ आते हैं। जबकि जैविक पर्यावरण के अंतर्गत पृथ्वी पर पाए जाने वाले सभी जीव–जन्तु आते हैं। ये जीवाणु, विषाणु, रोगाणु, कवक शैवाल, शाक, झाड़ी, फसलें, बड़े वृक्ष कृमि, कीट, मछली, सांप तथा स्तनधा1 0री

हो सकते हैं। पृथ्वी गृह पर जीवित विश्व जटिल किन्तु अन्योन्याश्रित भौतिक, रसायनिक व जैविक प्रकमों से आधार प्राप्त करता है। ये सभी प्रकय विकास के लिए उत्तरदायी होते हैं। इस तरह हम यह पायेंगे कि पर्यावरण में सभी कुछ प्रत्येक से जुड़ा है।

1.1.1 पर्यावरणीय शिक्षा :–

शिक्षा क्यों तथा पर्यावरणीय शिक्षा ही क्यों? साधारणतः गरीब तथा शक्तिहीन पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न करते हैं। कैसे? गरीब देश व्यक्त तकनीकों को अपनाते हैं। उच्च अनुभव तथा सामूहिक बुद्धिमता से उत्पन्न पारम्परिक ज्ञान तथा विकसित विश्व के वैज्ञानिक रूप से उत्पन्न ज्ञान के बीच लड़ाई चल रही है। पहला (गरीब) अधिक विश्वसनीय है तथा पर्यावरण का मित्र है जबकि दूसरा तकनीकी लाभ प्रदान करता है। एक अच्छे समाज की प्राप्ति पारम्परिक बुद्धि तथा आधुनिक ज्ञान के योग के बिना नहीं हो सकती। सार्वभैमिक सुलझनों के लिए प्रार्दशिक सत्य की आवश्यकता होती है तथा प्रादर्शिक क्रियाओं से सार्वभौमिक उलझने झलकनी चाहिए। अतः पर्यावरणीय शिक्षा विकास शील देशों में शिक्षा प्रणाली में सबसे सर्वोच्च शिखर पर है। प्रश्न यह उठता है कि पर्यावरणीय शिक्षा देने का सही समय क्या है तथा किस स्तर पर उच्च प्राथमिकता प्राप्त होती है क्या विश्व में पर्यावरणीय शिक्षा कार्यक्रम साझा होना चाहिए?

इन सिफारिशों पर कार्य करते हुए यूनेस्को (Unesco) तथा यूएनडीपी (UNDP) व जनवरी, 1975 में पर्यावरणीय शिक्षा का अन्तराष्ट्रीय कार्यक्रम शुरू किया, इसके लक्ष्य थे –

- पर्यावरणीय शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम के विकास को पढ़ाने के लिए जरूरी समवर्गीकरण, संयुक्त योजना, कार्यक्रम पूर्ण क्रियाओं को आसान करना।
- पर्यावरणीय शिक्षा से जुड़े मतों तथा जानकारी के अन्तर्राष्ट्रीय विनिमय को बढ़ाना।
- उपदेश तथा अध्ययन में विभिन्न परिघटना को उचित रूप से समझने के लिए अनुसंधान चलाना।
- पर्यावरणीय शिक्षा में नई विधियों, पदार्थों तथा कार्यक्रमों की व्यवस्था तथा मूल्यांकन।
- पर्यावरणीय शिक्षा कार्यक्रमों के लिए अच्छे व पर्याप्त कर्मचारी वर्ग को प्रशिक्षित करना।
- पर्यावरणीय शिक्षा से जुड़े सदस्य राज्यों के लिए सलाहकार बनाना।

पर्यावरणीय शिक्षा पर बिलिसी यू.एस.एस.आर. (1977) में अंतरा सरकारी सभा में छः उद्देश्यों को सूचित किया गया।

1. जागरूकता (Awareness) पूर्ण पर्यावरण तथा इसमें जुड़ी समस्याओं की संवेदनशीलता के प्रति लोगों को जागरूक करने में सहायता प्रदान करना।
2. ज्ञान (Knowledge) लोगों को पूरे पर्यावरण तथा उससे जुड़ी समस्याओं के बारे में समझाना तथा मानवता की दोषपूर्ण उत्तरदायी उपस्थिति तथा उसमें भूमिका का ज्ञान प्रदान करना।
3. अभिवृत्ति (Attitudes)- पर्यावरण के लिए लोगों के सामाजिक मूल्य तथा उसके प्रति प्रबल भावना और इसके बचाव तथा सुरक्षा की समझ।

4. चतुराई (skills) इस प्रकार की समस्याओं की सुलझाने के लिए लोगों में चतुरता उपार्जित करने में सहायता प्रदान करना।

5. मूल्यांकन क्षमता (Evalution ability)- पर्यावरणीय मूल्यों तथा पारिस्थिति की राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, सौन्दर्यबोध तथा शैक्षिक कारकों का मूल्यांकन।

6. भागीदारी (Participation)- पर्यावरणीय समस्याओं तथा सूलझनों के संदर्भ में लोगों को जिम्मेदारी की एहसास दिलाना।

पर्यावरण का तात्पर्य उस समूची भौतिक एवं जैविक अवस्था से है। जिसमें सभी जीवधारी रहते हैं, बढ़ते-पनपते है और अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों का विकास करते हैं। प्रकृति में विद्यमान जीवन के लिए पोषक और धातक तत्वों के अनुपात में एक संतुलन रहता है जिसे प्रकृति स्वयं नियंत्रित करती है। परन्तु मानव की गतिविधियों के कारण इस संतुलन में होने वाली विकृति से पर्यावरण को हानि होती है। अतः सृष्टि में यह संतुलन बनाए रखना नितान्त आवश्यक है। भारतीय वैदिक संस्कृति एवं सभ्यता इस तथ्य का पुष्प प्रमाण है कि यहाँ सभी धर्म एवं संप्रदायों को सदैव आदर की दृष्टि से देखा गया है। यहाँ की संस्कृति का उद्घोष है- "जीओं और जीने दो"। यह शंखनाद केवल प्राणियों तक ही सीमित नहीं है, अपितु इसकी सीमा सभी चर-अचर, जीव-जड़ एवं प्रकृति तक है। अतः मनुष्य जीवन और प्रकृति में सामंजस्य रहने से मनुष्य प्रकृति का अंग बनकर रहे और उसमे केवल उतना ही के जितनी एसकी आवश्यकता है।' भारतीय संस्कृति की बडी विशेषता रही है। कि यहॉ वायु, जल, अग्नि, पृथ्वी एवं आकाश सभी पंचमहाभूतो के भीतर छिपी हुई दिव्यसत्ता को मनुष्य ने पहचाना है। हम भारतीय हमेशा से ही एक ऐसी सभ्यता के पक्षकार रहे है। जो सबके लिऐ मंगकारी तथा कल्याणकारी हो

। यहाँ सत्य शिव सुन्दरम् का सिद्धात सम्पूर्ण सृष्टि के संरक्षण में सहायक सिद्ध होता है। अतः जब सब कुछ सत्य है। कल्याणमय हो और सुन्दर हैं तब उसे प्रदूषित करने का प्रश्न ही कहाँ उठता हैं।

हमारे यहाँ जीव हत्या, वृक्ष को काटना, जल स्त्रोतों को दूषित करना, ध्वनि विस्तारकों के द्वारा प्रचार-प्रसार करना भौतिक एवं भोग विलासिता को पनपाने का संदेश कहीं भी नहीं दिया गया है। परन्तु आज का भौतिकवादी मानव निर्दयता से वृक्षों को काट रहा है, नदियों को बांध रहा है, कारखानों से निकलने वाले जहरीले रसायनों के धुए को वायुमंडल में निडरता से छोड़ रहा है। एवं अपशिष्ट एवं बहिस्त्रावों को जल स्त्रोतों मे बड़ा रहा है, अपने आवास एवं सड़कें चौड़ी करने हेतु वृक्षों का विनाश कर रहा है। इतना ही नहीं अपनी विलासिता के लिए प्राकृतिक संसाधनों, विशेषतः जल का अत्यधित दुरूपयोग कर रहा है, जिसके फलस्वरूप वर्षा का अभाव, सुश एवं अकाल का निरंतर पड़ना भूजल का निरंतर गिरना, ध्वनि प्रदूषण एवं घरेलू प्रदूषण के कारण नितनई बीमारियाँ हो रही हैं।

प्रदूषण आज विश्व की सर्वाधिक चर्चित एवं भयंकर समस्या है क्योंकि वर्तमान समय में इसने इतना अधिक विस्तृत एवं विफल रूप धारण कर लिया है कि पूरे जीव जगत की अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। वस्तुतः आज प्रायः महानगर, शहर कस्बा और यहाँ तक कि गांव भी प्रदूषण की समस्या से ग्रसित है। यही कारण है कि आये दिन हमें सुनने को मिलता रहता है कि अमुक सरोवर में मछलियों का सामुहिक विनाश हो गया। अमुक नदी या पानी पीने से अमुक नगर शहर या गांव के निवासी एवं भारी संख्या में पशु रोगग्रस्त हो गए।

एक सर्वेक्षण के अनुसार दूषित जल के उपयोग से फलने वाले रोग केवल अतिसार और पेचिरा से ही सम्पूर्ण विश्व में 30 लाख बच्चे प्रतिवर्ष प्रभावित होते हैं। खाद्य पदार्थो में कीटनाशी रसायनों के अविवकेपूर्ण एवं अनुचित प्रयोग से प्रतिवर्ष लाखों मनुष्य, पशु-पक्षी एवं जलीय जीव कुप्रभावित हो रहे हैं। आज अस्पतालों के कचरों, नाभिकीय अपशिष्टों एवं पॉलिथीन के बढ़ते प्रयोग के कारण हमारा पर्यावरण लगातार प्रदूषित हो रहा है।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के तहत कराए गए सर्वेक्षण के अनुसार विश्व की 80 प्रतिशत से अधिक शहरी जनता अर्थात् एक अरब 80 करोड़ लोग ऐसे वातावरण में सांस लेते हैं, जिनमें विषैली गैसें विद्यमान रहती है। आज वायु प्रदूषण का लाभांश अम्ल वर्षा से पूरा विश्व किस तरह से त्रस्त हो रहा है, यह इस बात से स्पष्ट है कि अमेरिका के अकेले न्यूयार्क राज्य में 200 से अधिक झीलें मृत हो गई हैं, स्वीडन की लगभग 1500 झीलें मछलियाँ विहिन हो गई हैं और कनाडा की लगभग 2000 झीलें तेजाबी वर्षा से लगभग विनाश के कगार पर हैं। अम्लीय वर्षा से फसल एवं वन दोनों नष्ट हो रहे हैं तथा विभिन्न प्रकार के पत्थरों से निर्मित इमारतें अपनी चमक खोती जा रही है। वैज्ञानिकों ने इसे 'स्टोन कैंसर' का नाम दिया है। हमारी विश्व प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्मारक 'ताज महल' भी स्टोन कैंसर का शिकार हो चुकी है। जनसंख्या वृद्धि का भी प्रदूषण बढ़ाने में विशिष्ट योगदान है। आज हमारे देश की जनसंख्या विश्व की कुल जनसंख्या का 15 प्रतिशत है। भारत जनसंख्या वृद्धि के साथ विश्व में पांचवा प्रदूषित राष्ट्र बन चुका है।

आज विश्व के मानव समाज के समक्ष जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य है, - पर्यावरण का प्रबंधन एवं संरक्षण। अतः अब समय आ गया

है कि पर्यावरण संरक्षण के महत्व को समझा जाए एवं तदनुकूल इसका प्रबंधन किया जाय। इसके लिए हमें व्यक्तिगत एवं सामुदायिक स्तर पर *महत्वपूर्ण प्रयास करने होंगे तथा सतत विकास के साथ पर्यावरण के* सभी घटकों में संतुलन रखना होगा, जैविक साधनों का अधिक उपयोग करना होगा, तथा सबसे महत्वपूर्ण कार्य है- जनमानस में पर्यावरण जागरूकता के प्रति चेतना जाग्रत करना। इस कार्य को हमें निष्ठा से करना होगा।

पर्यावरण हेतु जनचेतना का होना इसलिए आवश्यक है। चूँकि तब तक पर्यावरण के प्रति प्रत्येक व्यक्ति को सचेत नहीं किया जा सकता। जब तक कि वह पर्यावरण के प्रति अपना ध्यान आकर्षित नहीं कर सकता। डॉ. नसीम ए. आजाद के अनुसार "एक ऐसा कदम जो किसी उद्देश्य के प्रति जनता को सूचना या शिक्षा के उद्देश्य से उठाया जाये जन जागरूकता कहलाता है।"

पर्यावरण के प्रति जनता जागरूक रहे इस उद्देश्य से विश्व में अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

जैसे ब्राजील के रियो-डि-जेनरों शहर में संस्था द्वारा पृथ्वी शिखर सम्मेलन जो सन् 1992 में 3 जून से 14 जून तक आयोजित हुआ तथा पर्यावरण जागरूकता के संबंध में सबसे पहला सम्मेलन 5 जून 1972 में स्वीडन की राजधानी स्टोक होम में आयोजित हुआ। संयुक्त राष्ट्र संधीय रियो पर्यावरण द्वारा भी जन जागरूकता के उद्देश्य से अनेक पर्यावरणीय क्रियाओं पर बल दिया गया।

1.1.2 स्थानीय स्तर पर पर्यावरणीय जागरूकता-

स्थानीय स्तर पर पर्यावरणीय बोध सबसे आसान होता हैं, क्योंकि पर्यावरणीय तत्वों की निकटता का सर्वाधिक लाभ छोटे स्तर पर

दिखाई देता है। गाँव या नगर का पर्यावरणीय बोध भिन्न-भिन्न होता है। नगरवासी पेड़ के महत्व को नकारते रहे हैं, इसलिए नगरों में *कार्बन-डाई-ऑक्साइड की मात्रा बढ़ती जा रही हैं। अब अनेक महानगरों* के भीतर व सीमान्त भागों में हरित पेटियों (Green betts) की रोपाई की जा रही है। प्राचीन संस्कृतियों में उपवन नगर की संकल्पना थी, जिससे नगरवासियों को शुद्ध हवा मिलती थी। उन्हें पर्यावरण का बोध था। बढ़वाल-कुमाऊँ क्षेत्र में जन्मा चिपकों आन्दोलन वृक्षों के प्रति बढ़ती नई चेतना या पर्यावरणीय प्रत्यक्षीकरण का प्रतीक है। मानव को जब अपने वातावरण का बोध या ज्ञान होता है, तब वह ऐसे कार्य करने लगता है, जिनसे वातावरण में गुणवत्ता आती है। पर्यावरणीय बोध के लिए आज भी विकसित और विकासशील देश चिन्तित तथा प्रयासरत है।

1.1.3 राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरणीय जागरूकता-

राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरणीय चेतना सशक्त होनी चाहिए। किसी राष्ट्र के प्राकृतिक संसाधनों की सही-सही जानकारी प्राप्त कर लेने के पश्चात् कुछ ठोर कार्य किए जा सकते हैं, जिनसे पर्यावरण में वांछित स्तर सुधार लाया जा सकता है। जहाँ पर्यावरण असंतुलित रहता है, संभव है। राष्ट्रीय स्तर पर वनस्पति, मिट्टी, जल, वायु, खनिज तथा उद्योगों के संबंध में नीतिक किया जा सकता है। ये नीतियाँ पर्यावरणीय बोध पर ही आधारित होती है। भारत जैसे देश में स्वतः ही के लिए मैदानी भागों की एक-तिहाई (33%) पहाड़ी क्षेत्रों की 60% भूमि वनों से ढक देनी चाहिए। सरकार को दावा है कि देश का 23% भू-भाग से ढका हुआ है, परन्तु उपग्रह द्वारा किए गए चित्रों ने यह तथ्य झूठा बतला दिया है। 1972-75 की अवधि में उपग्रह द्वारा लिए गए चित्रों से पता चला है, कि भारत के केवल 16.89% भू-भाग पर वन क्षेत्र हैं। 1980-82 में

वन क्षेत्र घटकर 14.10% रह गया। भारतीय वनों पर प्रकाशित नवीनतम रिपोर्ट The State of forests-1991 के अनुसार देश में 19.44% क्षेत्र पर जंगल शेष हैं, जिसमें सधन वनों का क्षेत्र 11.71% ही है। देश में अरूणाचल प्रदेश, मणिपुर तथा अण्डमान निकोबार द्वीप समूह ही ऐसे क्षेत्र हैं, जो 1952 ई. में निर्धारित वन नीति के अनुसार वन आवरण की शर्त पूरी करते हैं।

राष्ट्रीय मापदण्डों से स्पष्ट है कि भारत में जंगलों का पर्याप्त विनाश हुआ है, जिसका प्रभाव मिट्टी, वायु तथा जल–स्त्रोतों पर भी पड़ा है। मिट्टी व जल के उपयोग में भारतवासियों को अधिक सचेत व जागरूक रहने की आवश्यकता है। इन दोनों संसाधनों के सम्यक रख–रखाव से अनेक पर्यावरणीय समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है। इसके साथ ही बेकारी व भूखमरी जैसी समस्याओं को भी हल किया जा सकता है। ''पर्यावरणीय बोध राष्ट्रीय चरित्र से भी जुड़ा हुआ होता है। राष्ट्र के प्रति निष्ठा व अनुराग वहाँ के निवासियों के पर्यावरणीय बोध पर आधारित होता है। पर्यावरणीय अतियोक्तिओं वाले क्षेत्रों में निवासियों के संगठनात्मक आधार कमजोर होते हैं। तथा कार्यकुशलता क्षीण होती है।

1.1.4 अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरणीय जागरूकता–

आधुनिक जीवन में पर्यावरणीय समस्याओं को बहुत महत्व दिया जाने लगा है। विश्वभर के जनमानस में इस विषय में जागरूकता में वृद्धि हुई है। इसी का परिणाम है कि मानव तथा पर्यावरण की समस्याओं को समझने तथा सुलझाने के लिए सारे विश्व में अनेक अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का गठन हुआ है। पर्यावरण से संबंधित कुछ प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों उनके उद्देश्यों तथा कार्यक्रमों का विवरण यहाँ दिया जा रहा है।

पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अनेक अन्तर्राष्ट्रीय संस्थायें कार्यरत् हैं जिनमें प्रमुख है–

1. संयुक्त राष्ट्र का पर्यावरण कार्यक्रम –

यू.एन.ई.पी. का आरंभ जून 1972 को स्टाकहोम में हुए मानव पर्यावरण सम्मेलन के परिणाम स्वरूप हुआ। इसमें 58 देश सम्मिलित हैं। संस्था का मुख्यालय केनया के नेरौबी शहर में हैं। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दिया जाता है।

(i) मानव बस्तियाँ, मानव स्वास्थ्य तथा आवास

(ii) पर्यावरण तंत्र

(iii) पर्यावरण तथा उसका विकास

(iv) समुद्र

(v) ऊर्जा

(vi) प्राकृतिक विपदायें

2. आधुनिक समाज की चुनौतियों से संबंधित कमेटी –

मानव पर्यावरण से संबंधित समस्याओं के अध्ययन हेतु सन् 1969 में नाटो (NATO) राष्ट्रों द्वारा सी.सी.एम.एम. का गठन किया गया था। यह संस्था निम्नलिखित विषयों पर ध्यान देती है।–

(i) संकटकारी अपशिष्टों का विसर्जन

(ii) तृतीय जल प्रदूषण

(iii) अन्त स्थलीय जल

(iv) वायु प्रदूषण

(v) अपशिष्ट जल के शोधन की आधुनिक तकनीक

3. **संयुक्त राष्ट्र संघ का आर्थिक आयोग –**

ई.सी.ई. का गठन सन् 1971 में यूरोप तथा उतरी अमेरिका, सीवियत संघ इत्यादि *द्वारा किया गया था।*

4. **यूनेस्को का मनुष्य तथा जैवमंडल कर्यक्रम –**

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत जैवमंडल पर माननीय गतिविधियों के प्रभाव के अध्ययन तथा शोध को प्रोत्साहन दिया जाता है।

5. **अन्तर्राष्ट्रीय जैव कार्यक्रम –**

तात्कालिक जैव समस्याओं के अध्ययन के लिए सन् 1963 में आय बी.पी. (I.B.P.) की स्थापना की गयी थी। 1967 तक लगभग 38 देशों ने इस कार्यक्रम में सम्मिलित होने तथा सहयोग देने की सहमति दे दी थी।

1.2 अध्ययन की आवश्यकता :–

पर्यावरण यह एक प्रत्यय है जो अपने में ही परिपूर्ण है। इन दिनों यह एक मुख्य ध्यान का विषय बन गया है, यह अपनी और विशिष्ट ध्यान आकर्षित कर रहा है। कई मायनों में हमारा विज्ञान का स्कूली पाठ्यक्रम इसे पूर्ण कर रहा है। यह हमारे अभ्यास का मुख्य उद्देश्य है यह अभ्यास विज्ञान, सामाजिक विज्ञान में स्कूली उपलब्धि पर्यावरणीय जागरूकता एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की केन्द्रित करता है।

विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता के महत्व को ध्यान में रखकर उनके द्वारा की गयी विभिन्न तैयारियाँ एवं शैक्षिक उपलब्धि को महत्व देती है। गुजरात राज्य में ''पर्यावरण'' विषय पर भिन्न–भिन्न संशोधन कार्य हुए हैं, परन्तु प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता पर यह प्रथम मौलिक अनुसंधान कार्य हो रहा है। इसी

आवश्यकता से इस विषय पर अध्ययन करने का विनम्र प्रयास किया गया है।

विद्यार्थियों को पर्यावरणीय सुरक्षा की ओर से जाने वाले विज्ञान के स्कूली पाठ्यक्रम के महत्व की पूर्ति करता है। तीव्रगति से बदलने वाली विश्व की बदलती हुई जरूरतों को पर्यावरणीय शिक्षा को उत्तर देना चाहिए।

पाठ्यक्रम में बदलाव लाना यह पर्यावरणीय शिक्षा में चर्चा का विषय हो सकता है।

सूचना सामग्री इस तरह से लिखी होनी चाहिये ताकि यह शिक्षकों को समझ में आ सके कि विद्यार्थियों को किस तरह से निर्देशित किया जाना चाहिये ताकि वह नैसर्गिक/प्राकृतिक एवं सामाजिक घटनाओं को सराहे एवं रूचि ले।

यह अध्ययन यह देखता है, कि पर्यावरणीय शिक्षा ने पर्यावरणीय जागरूकता एवं शैक्षिक उपलब्धि की तैयारी की है या नहीं।

विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता विज्ञान की स्कूलों में ढ़ालकर उसे शैक्षिक उपलब्धि में जब तक लाया नहीं जाता, तब तक पर्यावरण का घटता असंतुलन दूर नहीं किया जा सकता, इसलिये यह अध्ययन पर्यावरणीय जागरूकता एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच में सहसंबंध का केन्द्रित करता है।

1.3 समस्या का कथन :–

" प्रारंभिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।"

1.4 उददेश्य :–

1. कक्षा आठवीं के छात्रों में पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना।
2. कक्षा आठवीं के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की पर्यावरण जागरूकता में अंतर ज्ञात करना।
3. कक्षा आठवीं के छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण जागरूकता में अंतर ज्ञात करना।
4. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता में अंतर ज्ञात करना।
5. कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता एवं विज्ञान उपलब्धि में संबंध जानना।
6. कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता एवं सामाजिक विज्ञान उपलब्धि में संबंध जानना।

1.5 शोध की परिकल्पनाएँ :–

1. कक्षा आठवीं के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों में पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. कक्षा आठवीं के छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता एवं विज्ञान उपलब्धि में कोई सार्थक संबंध नहीं है।
5. कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता एवं सामाजिक विज्ञान उपलब्धि में कोई सार्थक संबंध नहीं है।

1.6 शोध प्रबंध में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों का अर्थ :–

पर्यावरण जागरूकता –

ब्लूम ने (1956) जागरूकता को बोधात्मक एवं का प्रथम सोपान बताया है। यहां अधिगमकर्ता किसी एक तत्व या उद्दीपक के अस्तित्व से संवेदनशील रहता है। ज्ञान की तरह यह सिर्फ प्रत्यास्मरण से ही संबंधित नहीं है। ब्लूम ने बताया है कि अवसर मिलने पर अधिगमकर्ता भी घटना के बारे में चेतना पाता है। यह दृष्टिकोण इस अध्ययन में रखा गया है। जागरूकता परीक्षण में उच्च उपलब्धि यह दर्शाती है कि व्यक्ति का पूर्ण पर्यावरण के प्रति बोधगम्य भी उच्च श्रेणी का है।

ताज हसीन के पर्यावरण जागरूकता मापनी के आधार पर व्याख्या

"ताज हसीन के पर्यावरण जागरूकता मापनी के गुणांकन के आधार पर पर्यावरण जागरूकता देखी गई है।"

शैक्षिक उपलब्धिः–

"शैक्षिक उपलब्धि जानने के लिए शालेय रिकार्ड से प्राप्त कक्षा–7 की वार्षिक कसौटी के नतीजे तथा कक्षा 8 की प्रथम एवं द्वितीय कसौटी के विज्ञान एवं समाज विज्ञान विषय में प्राप्त अंकों का व्यक्तिगत तौर पर औसत निकाल के शैक्षिक उपलब्धि में लिया है।"

शासकीय विद्यालय :–

"ऐसे विद्यालय जो शासन द्वारा खोले गये है।"

अशासकीय विद्यालय :–

"ऐसे विद्यालय जो निजी, स्वयं के व्यवसाय के लिये अथवा अनुदान प्राप्त राशियों से खोले गये हैं।

1.7 अध्ययन का सीमांकन :–

1. अध्ययन गुजरात राज्य के राजकोट जिले के शहर एवं ग्रामीण क्षेत्र तक सीमित रखा गया है।
2. अध्ययन राजकोट जिले के 4 शासकीय विद्यालयों और 4 अशासकीय विद्यालयों कुल 8 विद्यालयों तक सीमित रखा गया हैं।
3. अध्ययन कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।
4. अध्ययन ग्रामीण क्षेत्र के 120 विद्यार्थी जिनमें 60 छात्र और 60 छात्राऐं हैं एवं शहरी क्षेत्र के 120 विद्यार्थी जिनमें 60 छात्र 60 छात्राएं तक सीमित रखा गया है।
5. अध्ययन कुल 240 विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।
6. शैक्षिक उपलब्धि के लिये विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान विषयों को लिया गया है।